वापसी

हुआ यह कि सर्कस के जानवर बिगड़ गये। सभी को एक ही शिकायत थी कि सर्कस का ट्रेनर उन्हें पीटता बहुत है। सारा वक्त उनकी पीठ पर अपनी चाबुक फटकारता रहता है। भला इतना मारने की क्या जरूरत है! एक कदम टेढ़ा पड़ गया तो कौन-सी आफत आ जायेगी! मगर नहीं, ट्रेनर चाहता है कि हाथी स्टूल पर खड़ा हो तो एक ही बारी में खड़ा हो जाये। और फिर खड़े-खड़े ही सूँड उठाकर दर्शकों को सलाम करे। उधर खाने को कम मिलने लगा था। सभी दुबला गये थे। जंगल के जानवरों वाली कोई बात ही नहीं रह गयी थी।

शेर कहने लगा, "ट्रेनर खेल के समय दर्शकों के सामने मुझ पर चाबुक चला देता है। इससे क्या मेरी हेठी नहीं होती? कहाँ मैं जंगल का राजा और कहाँ एक दुबले-पतले ट्रेनर से चाबुक खा रहा हूँ!"

शेर बौखलाया हुआ था। देर तक गुर्राता रहा, "एक झापड़ दूँ तो सारे दाँत बाहर आ जायें। काला कोट पहने, बड़ा तमगे लटकाये घूमता है! पहले ढेर-सा मांस पिंजरे में फेंका जाता था। अब उससे आधा भी नहीं मिलता। इस पर दिन को चैन, न रात को। दिनभर पिंजरे में भूखा पड़ा ऊँघता रहता हूँ। स्कूलों के छोकरे आकर मुझे परेशान करते हैं। कभी कंकड़ फेंकते हैं, कभी छड़ी की नोक चुभोते हैं..."

भालू अपनी जगह परेशान था, "यहाँ की धूल-मिट्टी में तो मेरा दम घुटता है। वर्षों से नहाया नहीं हूँ। खेल के वक्त मेरे सिर पर टोपी और नीचे घाघरा पहना देते हैं। वे समझते हैं कि मुझे खूबसूरत बना रहे हैं। अजी, मुझे खूबसूरत बनाना होता तो मुझे नहलाते, मेरे बाल कंघी करते, मुझे अच्छी-अच्छी चीजें खाने को देते। दिन में तीन-तीन बार नाचना पड़ता है। न नाचो तो लाठी पड़ती है। दाँत मेरे टूट गये हैं! आँखों से सारा वक्त

गीद बहती रहती है...''

सभी जानवर सताये हुए थे। सभी अपनी-अपनी दर्द-कहानी कहते रहे।

आखिर सभी ने फैसला किया कि अब यहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिए।

''मगर जाओगे कहाँ?'' हाथी ने पूछा। हाथी उन सबमें न केवल कद-बुत में बड़ा था, बल्कि सबसे अधिक अनुभवी और समझदार भी था।

''जंगल में लौट जायेंगे।'' सभी ने एक आवाज में कहा, ''हम जंगल के रहनेवाले हैं, जंगल में ही लौट जायेंगे।''

इस पर हाथी ने बारी-बारी से सबको देखा। उसकी आंखें गधे पर अटक गयीं।

''क्या तुम भी जंगल में लौटना चाहोगे?'' हाथी ने गधे से पूछा, ''तुम जंगल में लौटकर क्या करोगे, तुम तो शहर के रहनेवाले हो!''

''शहर में रहता हूँ तो क्या, हमारे पुरखे तो जंगल में ही रहते थे।''

''जंगल में गधे कब रहते थे? मैंनें तो जंगल में कभी किसी गधे को नहीं देखा!''

इस पर भालू ने गधे से कहा, ''हमें तो जंगल से पकड़ा गया था, तुम्हें सरकस वाले जंगल से तो पकड़कर नहीं लाये ना!''

''इससे क्या होता है? हमारे पुरखे तो जंगल में ही रहते थे।''

''तुम्हें कहाँ से पकड़ा गया था? सरकस से पहले तुम कहाँ पर रहते थे?'' हाथी ने पूछा।

''हम रहते तो एक धोबी के पास थे।'' गधे ने खिसियाकर कहा।

''वहाँ पर काम क्या करते थे?''

''धोबी का गट्ठर नदी पर ले जाते थे।''

''और क्या काम करते थे?''

''और क्या? बस, घास चरते थे और मन खुश हुआ तो हाँक लगाते थे।''

इस पर सभी जानवर हँसने लगे। पास में मनचला बन्दर बैठा था। बोला, ''तो लगाओ हाँक, हम भी सुने।''

''हाँक तो खुशी में लगायी जाती है। इधर

तो मेरा मन बहुत उदास हो रहा है।''

पर सभी के अनुरोध करने पर गधे ने हाँक लगायी, मुँह आसमान की ओर करके ऊँची आवाज में 'ऊँहा,' 'ऊँहा,' 'ऊँहा' करने लगा। सभी जानवर हँसी से लोट-पोट होने लगे।

उन्हें हँसता देखकर गधा बड़ा खुश हुआ। हँसी थमने पर बोला, ''मेरी हाँक तो इससे भी लम्बी होती है। जब मैं खुश होता हूं तो सात बार ऊँहा, ऊँहा करता हूँ, अभी तो केवल तीन ही बार किया है।''

हाथी गम्भीर होकर बोला, ''तुम्हें चाहिए कि तुम धोबी के पास लौट जाओ। जंगल में तुम्हारा क्या काम! जंगल में तो कोई जानवर गट्ठर नहीं उठाता।''

''नहीं जी, हम जंगल में तुम्हारे साथ रहेंगे। मन आया तो हाँक लगायेंगे। मन आया तो दुलत्ती झाड़ेंगे।''

''मगर वहां पर तुम्हारा सगा-सम्बन्धी तो कोई नहीं होगा। वहाँ पर क्या अकेले घूमते रहा करोगे?''

गधे की बगल में कुत्ता जीभ निकाले खड़ा था। यही सवाल हाथी ने कुत्ते से भी किया, ''तुम्हारे तो पुरखे भी जंगल में नहीं रहते थे। तुम्हारा जंगल में क्या काम?''

कुत्ता कभी एक के मुँह की ओर देख रहा था तो कभी दूसरे के मुँह की ओर। वह तो यह भी भूल चुका था कि उसके पुरखे कभी जंगल में रहते भी थे या नहीं।

''तुम्हें सरकसवाले कहाँ से लाये थे?''

इस पर गधे ने व्यंग्य से कहा, ''कहाँ से लाये होंगे जी, यहीं किसी हलवाई के तख्ते के नीचे से पकड़ लिया होगा।''

बन्दर के पास बन्दरी बैठी थी। अभी भी सरकस की पोशाक पहने, दुल्हन बनी इठला रही थी। हरे रंग का घाघरा और गुलाबी रंग की चुनरी। आँखों में सुरमा लगा था और मुँह पर सुरखी। चुनरी में से झांककर बड़े नखरे के साथ बोली, ''कुत्ते को तो हम साथ नहीं ले जायेंगे। उससे तो हमें बू आती है!''

और फिर मुँह सिकोड़कर कहने लगी, "यहाँ सरकस में मुझे कुत्ते की पीठ पर रोज बैठाते हैं, मगर बू के मारे मेरी तो नाक ही फटने लगती है।"

इस पर कुत्ता झुँझलाया, "तू कहाँ जंगल की रहनेवाली है! तू भी तो शहरों में जगह-जगह जूठन खाती फिरती थी।"

इस पर बन्दरी ऐंठकर बोली, "क्यों जी, हमारे भाई-बन्धु तो जंगल में रहते हैं। हमें तो पकड़ा भी जंगल से गया था।"

इस पर हाथी ने गम्भीरता से कुत्ते से कहा, "तुम जंगल में करोगे क्या?"

इस पर कुत्ता उचककर बोला, "वहाँ पर हम आपके लिए भूँका करेंगे। जिस पर कहोगे भूँकने लगेंगे, जिस पर कहोगे झपट पड़ेंगे, जिसे कहोगे काट खायेंगे... और नहीं तो आपके कदमों में ही लोटा करेंगे।"

"इन बातों की तो इन्सान को जरूरत रहती है, हम जानवरों को इनकी क्या जरूरत? हम खुद ही झपट लेते हैं जिस पर झपटना होता है। तुम यहीं पर रहो।"

भालू ने बड़ी सद्भावना से कुत्ते को समझाया, "मेरा सुझाव है कि तुम चिड़ियाघर में चले जाओ। वहाँ तुम्हें खाना भी अच्छा मिलेगा और कोई छेड़-छाड़ भी नहीं होगी, ट्रेनर का चाबुक भी नहीं पड़ेगा।"

इस पर बन्दरिया घूँघट के अन्दर से ही ठहाका मारकर हँस पड़ी, "कुत्ते को चिड़ियाघर में कौन रखेगा? लोगों ने क्या कभी कुत्ता देखा नहीं है जो वे उसे चिड़ियाघर में देखने जायेंगे?"

इस पर हाथी ने फिर गम्भीरता से सिर हिलाया और कुत्ते से बोला, "तुम किसी मालिक के बिना नहीं रह सकते। तुम यहीं पर किसी आदमी के पास चले जाओ, वहाँ आराम से रहोगे। वह खाना भी देगा और करतब भी सिखायेगा।"

हाथी ने कह तो दिया पर उसने सोचा कि इससे कुत्ते के दिल को ठेस लगी होगी। पर वास्तव में कुत्ता निराश नहीं हुआ, बल्कि

मुस्कराने लगा।

"आप कहते तो ठीक हैं," कुत्ते ने चहककर कहा, "मुझ-जैसे बिरले जीव बहुत कम हैं, जो न जानवरों में हों और न इन्सानों में, आपकी दया बनी रहे, मैं यहीं पर रहूँगा।" और वह दुम हिलाता वहाँ से चला गया।

कुत्ते से निबटने के बाद हाथी फिर गधे की ओर मुखातिब हुआ। गधे का एक कान हिल रहा था और छोटी-सी दुम दायें-बायें झूल रही थी।

"देखो भाई गधे, हम सोचते हैं कि तुम्हें जंगल में नहीं जाना चाहिए। वहाँ तुम किसके साथ रहोगे, क्या करोगे?"

गधे का कान खड़ा हो गया और वह हुमककर बोला, "अपनी तारीफ तो नहीं करनी चाहिए भाइयो, पर जितना बोझ हम ढो सकते हैं, और कोई नहीं ढो सकता।"

"जंगल में तुम्हें ढोने को मिलेगा ही क्या? जंगल में तो कोई जानवर बोझ ढोता ही नहीं है।"

इस पर गधा बोला, "हम जंगल में हाँक लगा सकते हैं, जंगल में जो जानवर भाई सुबह-सवेरे उठना चाहे, वह हमारी हाँक सुनकर जाग सकता है। जब हम धोबी के पास रहते थे तो मोहल्ले वालों को ऐसे ही जगाते थे," फिर गधा सहसा उचककर बोला, "हम आप लोगों को दुलत्ती झाड़ना सिखा सकते हैं।" और खड़े-खड़े गधे ने झट से दुलत्ती झाड़ दी। वहीं पास में बन्दरिया बैठी थी, वह कूदकर भालू की पीठ पर जा बैठी।

"क्या मतलब?" हाथी ने कहा, "तुम्हें किसी से लड़ना हो तो तुम सामने से नहीं लड़ते? पीछे से दुलत्ती मारते हो? यह तुमने कहाँ से सीखा?"

"सीखा तो शहर में ही है। मगर क्या मालूम हमारे पुरखे भी जंगल में दुलत्ती ही मारते रहे हों।"

हाथी ने फिर सिर हिलाया। वह आश्वस्त नहीं हो पा रहा था कि गधे को जंगल में ले जाना चाहिए या नहीं। इस पर गधा

गिड़गिड़ाने लगा, "तुम नहीं ले जाओगे तो हम कहाँ जायेंगे? अब तो इन्सान भी गधों को छोड़ने लगा है। गधों की पीठ पर अपना माल नहीं ढोता। अब तो धोबियों के पास भी गधे नहीं रहे। हम न यहाँ के रहेंगे, न जंगल के।"

इस पर भालू को गधे पर दया आ गयी। गधे की सिफारिश करते हुए बोला, "ले चलो, ले चलो, क्या मालूम इसे जंगल में अपना कोई पुरखा मिल ही जाये। न भी मिला तो हमारा क्या लेगा, अलग से खड़ा घास चरता रहेगा।"

भालू की पीठ पर बैठी बन्दरिया भी बोली, "ले चलो, ले चलो। और नहीं तो जब मन में आयेगा, हम गधे की पीठ पर बैठकर सवारी किया करेंगी।"

गधे का मामला तय हुआ तो सभी जानवर गम्भीरता से इस बात पर विचार करने लगे कि सरकस में से भागकर जंगल में कैसे पहुँचा जाये!

"क्यों, इसमें मुश्किल क्या है?" बन्दरी झट के बोली, "मैं अभी कूदकर पेड़ पर चढ़ जाती हूँ। सरकसवाले मेरा क्या कर लेंगे!"

हाथी को बन्दरी पर गुस्सा आ गया। बोला, "तुम तो भागकर पेड़ पर चढ़ जाओगी, हम कहाँ जायेंगे? अगर शेर सरकस छोड़ देगा तो वह भागकर कहाँ जायेगा? क्या वह शहर की सड़कों पर घूम सकता है? क्या मैं घूम सकता हूँ? क्या ये लोग हमें भाग जाने देंगे!"

जानवरों में हाथी सबसे बुद्धिमान था। उसकी एक-एक बात को अन्य सभी जानवर बड़े ध्यान से सुनते थे।

"तो तुम्हीं बताओ, क्या करें?" सभी ने आग्रह किया।

"एक ही तरीका है," हाथी बाबा बोला, "शीघ्र ही यह सरकस इस शहर में अपने खेल दिखाकर दूसरे शहर के लिए रवाना हो जायेगा। रास्ते में जंगल पड़ता है। हम मौके की ताक में रहें। जब भी हमारा काफिला

जंगल के पास से गुजरे, हम भागकर जंगल में घुस जायें।''

''मगर हमारे पिंजरे तो बन्द होते हैं। हम कैसे भाग सकते हैं?'' शेर ने पूछा।

''देखते हैं क्या होता है! कहीं न कहीं, कभी न कभी तो मौका मिल ही जायेगा।''

इस पर सभा विसर्जित हुई और जानवर सरकस के बाड़े में लौट गये। और कुछ दिन ही बाद उन्हें निकल भागने का अवसर भी मिल गया।

शहर में अपने खेल-तमाशे खत्म करने के बाद बालीराम सरकस अपने साज-सामान और छोकड़ों-पिंजरों के साथ दूसरे शहर के लिए रवाना हो गया। शहर में से निकलकर सरकस के छोकड़ों की पाँत सड़क पर आ गयी और दूर-दूर तक फैले मैदानों में से बल खाती हुई आगे बढ़ने लगी। अपने-अपने पिंजरों में बन्द जानवर, हिचकोले खाते, आँखें फाड़-फाड़कर बाहर की ओर देखे जा रहे थे कि कब जंगल आयेगा, कब जंगल आयेगा!

तीसरे दिन शाम के वक्त काफिला सचमुच एक जंगल के नजदीक पहुँचा। जंगल की ओर से पेड़-पौधों की महक से लदी हवा बह-बहकर आ रही थी। बहुत दिनों के बाद सरकस के जानवरों को इस खुली हवा में साँस लेना नसीब हुआ था। आकाश में चाँद खिल उठा था और हवा में ठण्डक आ गयी थी। अभी काफिला जंगल के नजदीक ही पहुँचा था कि सहसा हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर शेर भी जोर-जोर से दहाड़ने लगा। शेर के दहाड़ने की देर थी कि सरकस का प्रत्येक जानवर ऊँचा-ऊँचा चिल्लाने लगा।

सरकस के मालिक ने जानवरों का शोर सुना तो उसे अचम्भा हुआ। उसने अपने सहायक को बुलाया, ''क्या बात है, सभी जानवर चिल्लाने क्यों लगे हैं?''

''जानवर खुश हैं साहब, खुशी के कारण चिल्ला रहे हैं। बहुत दिन बाद ताजा हवा में

साँस लेने का मौका मिला है।''

पर मालिक को विश्वास नहीं हुआ।

''यह आवाज खुशी की आवाज तो नहीं जान पड़ती। कोई और ही कारण रहा होगा। इनकी चिंघाड़ में तो कोई दूसरा ही स्वर सुनायी पड़ता है।''

सहायक ने कान लगाकर फिर जानवरों की आवाज को समझने की कोशिश की। उसे भी उनका स्वर अजीब-सा लगा।

''यह भी तो हो सकता है कि जानवर इस लम्बे सफर से तंग आ चुके हों। ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर तीन दिन से सफर कर रहे हैं, हिचकोलों से परेशान हो गये हों।'' मालिक ने कहा। फिर सहायक को आदेश देते हुए बोला, ''पड़ाव डाल दो। यह मैदान अच्छा है, पास में नदी भी है। जानवर कुछ देर आराम कर लेंगे, उछल-कूद लेंगे, खा-पी लेंगे। इन्हीं के करतबों की तो हम कमाई खाते हैं। इन्हें सन्तुष्ट रखना जरूरी है।''

खेमे गाड़े गये। ट्रेनर और उसके साथियों ने पिंजरे खोल दिये। पास ही में झिल-मिल झिल-मिल करती निर्मल जल की नदी थी। सरकस के कुछ आदमी उनको पानी पिलाने के लिए उस ओर ले गये। कुछ जानवर तो बाहर आते ही कुलाँचें भरने लगे, कुछ पानी के अन्दर जा पहुँचे। भालू सीधा पीठ के बल लेट गया।

''मैंने ठीक ही कहा था,'' सरकस के मालिक ने सिर हिलाकर कहा, ''जानवर थके हुए हैं। पिंजरों में घुटे-घुटे महसूस कर रहे थे।''

जानवरों ने खूब पिकनिक की। चाँदनी रात में देर तक हँसते-बोलते रहे, पर जब पिंजरों में लौटकर जाने का वक्त आया तो एक भी जानवर अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। ट्रेनर ने चाबुक चमकायी तो भालू गुर्राकर ट्रेनर पर झपटने को हुआ। ट्रेनर शेर की ओर गया तो शेर ने बिना ट्रेनर की ओर देखे, अपना दायाँ अगला पंजा यों हवा में हिलाया, मानो ट्रेनर न हो, कोई मक्खी हो

जिसे अपने पैर से हटा रहा हो। पर जब ट्रेनर ने दूसरी बार चाबुक चमकायी तो शेर उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे ट्रेनर की ओर बढ़ने लगा। ट्रेनर की समझ में नहीं आया कि माजरा क्या है! और जब शेर उसके नजदीक पहुँचा तो वह इतना घबरा गया कि सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ। फिर तो शीघ्र ही वहाँ भगदड़ मच गयी। भालू तो उस वक्त तक ट्रेनर के पीछे भागता रहा जब तक ट्रेनर अपने खेमे में नहीं घुस गया।

"अब बैठा रह इधर, खबरदार जो बाहर निकला। हड्डी-पसली एक कर दूँगा।" भालू ने गुर्राकर कहा और इत्मीनान से साथियों की ओर जाने लगा।

इसके बाद सभी जानवरों ने जंगल की राह पकड़ी और शीघ्र ही पड़ाव पीछे छूट गया। झिलमिल नदी भी दूर होने लगी। सभी जानवर खुश थे, सभी के दिल गुदगुदा रहे थे। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गये, सभी अपने-अपने सगे-सम्बन्धियों के बारे में सोचने लगे।

हाथी सोच रहा था, मुझे जंगल से गये वर्षों बीत चुके हैं। जब मैं जंगल में रहता था तो मैं और मेरा भाई जंगल में साथ-साथ घूमा करते थे। न जाने अब मेरा भाई कहाँ होगा!

भालू को अपनी माँ याद आ रही थी। वह छोटा-सा था जब शिकारी उसे उठाकर ले गये थे। सभी खुश थे कि जंगल में लौट रहे हैं, वहाँ अपने मित्रों-सम्बन्धियों से मिलेंगे।

जंगल नजदीक आया तो भालू चलते-चलते रुक गया, "यारो, एक भूल हुई। सरकस का ढोल उठा लाते तो बुरी बात नहीं थी। सरकस में, तुम तो जानते हो, मैं ढोल बजाया करता था। वह इस वक्त मेरे पास होता तो हम ढोल बजाते हुए जंगल में दाखिल होते। खूब मजा रहता!"

सुझाव सभी को पसन्द आया। मगर अब क्या किया जा सकता था। इस पर शेर सभी को सुनाता हुआ बोला, "जंगल में एक भी शेर ऐसा नहीं होगा जो जलती आग के चक्कर में से सीधा कूद सके, जैसे मैं कूदा करता

था। सभी शेर आग से डरते हैं। अगर यहाँ पर चक्कर होता तो मैं उसमें से भागता हुआ दूसरी ओर निकल जाता, जंगल के सभी शेर देखते रह जाते!''

इस पर भालू फिर बोला, ''मगर कोई मुजायका नहीं। मैं जंगल में अपने करतब दिखाता हुआ दाखिल होऊँगा। अगले दोनों पैर उठा लूँगा और उन्हें उठाये-उठाये जंगल में दाखिल होऊँगा।''

इस पर खूब ठहाका लगा। हाथी बोला, ''अगर भालू दोनों पाँव उठाये जंगल में दाखिल होगा तो मैं नाचता हुआ प्रवेश करूँगा। थिरक-थिरककर पाँव उठाऊँगा। अगर कहीं किसी कटे हुए पेड़ का तना मिल गया तो उस पर चारों पैर रखकर खड़ा हो जाऊँगा।''

इस पर बन्दरी जो अभी भी सरकस का घाघरा पहने और चुनरी ओढ़े थी, बड़े नखरे से बोली, ''हम तो भालू की पीठ पर बैठे-बैठे ही दाखिल होंगी।''

सभी अपने जंगल के साथियों को दिखाना चाहते थे कि वे अब साधारण जानवर नहीं रह गये हैं, बहुत कुछ सीखकर, दुनिया देखकर लौटे हैं।

पौ फट रही थी, जब जानवर कजली जंगल के पास पहुँचे।

जंगल के निकट पहुँचते ही गधे ने अपना थूथना आसमान की ओर उठाया और जोर से हाँक लगायी। सात बार ऊँ-हाँ, ऊँ-हाँ, ऊँ-हाँ का सरगम दोहराया। आगे-आगे हाथी नाच रहा था। उसके पीछे शेर बार-बार हवा में कुलाँचें भरता चला जा रहा था। भालू ने अपने दोनों पाँव उठा रखे थे और कभी बायीं ओर तो कभी दायीं ओर, झूमता हुआ चला आ रहा था। बन्दरी इठलाती हुई कभी एक की पीठ पर, तो कभी दूसरे की पीठ पर उचक-उचककर बैठ रही थी।

गधे की आवाज सुनकर जंगल के सभी निवासी चौंके। यह कौन-सी आवाज है! ऐसी आवाज पहले तो कभी नहीं सुनी। पेड़ों की

टहनियों के बीच नन्हें-नन्हे पक्षियों ने घोसलों से सिर निकालकर बाहर देखा और चीं-चीं करने लगे।

गधे की आवाज दूर-दूर तक जंगल में पहुँची। वह अनेक जानवरों ने सुनी और वे अपने-अपने बिलों, माँदों, खोहों में से निकल-निकलकर बाहर आने लगे और भागम-भाग उस ओर जाने लगे, जहाँ से आवाज आयी थी।

जब तक वे पहुँचे, सरकस मण्डली की शोभायात्रा जंगल के अन्दर प्रवेश कर चुकी थी। हाथी टूटे हुए एक वृक्ष के तने पर चारों पैर रखे खड़ा था और सूँड उठा-उठाकर आसपास खड़े जंगल निवासियों का अभिवादन कर रहा था। दर्शकों की भीड़ इकट्ठी होती देखकर भालू जो अभी तक दोनों पाँवों के बल मटक-मटककर चला आ रहा था, मस्ती में आ गया और जीभ निकालकर नाचने लगा और फिर नाचना छोड़, जमीन पर पसर गया और दायें-बायें लोटने लगा।

जंगल के बहुत से पशु-पक्षी इकट्ठे हो गये थे और उन्हें देख-देखकर हैरान हो रहे थे। हाथी के छोटे भाई ने झट से उसे पहचान लिया। शेर को भी उसके भाई ने पहचान लिया। मगर वह हैरान था कि उसका भाई यह क्या कर रहा है! उसे देखकर शेर के भाई को झेंप होने लगी। क्या यह पगला तो नहीं गया है? क्या कभी शेर भी यों कुलाँचें भरते हैं?

उधर हाथी का भाई भी परेशान होने लगा था। मेरा भाई कूल्हे क्यों मटका रहा है? टूटे पेड़ के तने पर बार-बार क्यों चढ़कर खड़ा हो जाता है और क्यों बार-बार अपनी सूँड उठा रहा है? पहले तो अपने भाई को पहचानते ही हाथी का दिल भर आया था। हाय! कितना दुबला हो गया है। चमड़ी कैसे सूख गयी है? मुँह पर झुर्रियाँ ही झुर्रियाँ फैल गयी हैं। पहले तो ऐसा नहीं था...

अपनी माँद में से निकलकर टहलती हुई भालू की माँ भी चली आयी कि देखूँ तो

यह शोर कैसा है!

बुढ़िया माँ वहाँ पहुँचते ही ठिठककर खड़ी हो गयी। उस समय भालू जीभ निकाले, दोनों टाँगों पर खड़ा, ही-ही करता हुआ कूद रहा था।

"वही है। मेरा ही बेटा है। मगर हाय-हाय! इसकी क्या हालत हो रही है। नहीं, नहीं, यह मेरा बेटा नहीं हो सकता! बैरियों ने इसकी क्या हालत बना रखी है! इसका जबड़ा लटक रहा है! लगता है इसके सभी दाँत तोड़ दिये गये हैं। खाल पर वर्षों की धूल अटी है। मुझसे भी ज्यादा बूढ़ा लग रहा है।"

उधर भालू माँ को आते देखकर और भी ज्यादा मस्ती में नाचने लगा था। मानो उसे दिखा रहा हो — देखो तो माँ, क्या-कुछ सीखकर आया हूँ मैं!

उधर उसकी माँ रोये जा रही थी।

सरकस मण्डली देर तक अपने करतब दिखाती रही। शेर कुलाँचें भरता रहा, भालू जमीन पर लोटता रहा, हाथी नाचता, सूँड से बार-बार सलाम करता रहा, गधा बार-बार दुलत्तियाँ झाड़ रहा था। आसपास खड़े उनके सगे-सम्बन्धी झेंप रहे थे कि इनको क्या हो गया है!

आखिर गधे ने एक बार फिर थूथना ऊँचा उठाकर हाँक लगायी। 'ऊँ-हाँ, ऊँ-हाँ, ऊँ-हाँ' का स्वर जंगल में गूँज-गूँज उठा। सरकस मण्डली के सभी सदस्य समझ गये कि यह खेल की समाप्ति का बिगुल है। सभी करतब करते-करते रुक गये। फिर एक पाँत में खड़े होकर सबने दर्शकों का अभिवादन किया। सभी ने अगले पैर उठा रखे थे। हाथी बार-बार अपनी सूँड उठा रहा था।

मगर कहीं कोई तालियाँ नहीं बजीं, जंगल का एक भी जानवर भागकर उनके पास नहीं आया। किसी ने उनके अभिवादन का उत्तर नहीं दिया। सरकस के जानवर मन मसोसकर रह गये।

बन्दरी नाक चढ़ाकर और सिर झटककर बोली, "आखिर हैं तो जंगल के जानवर ही

न! सरकस का अदब-कायदा क्या जानें!''

इस पर भालू ने धीरे से कहा, ''अब हम लौट आये हैं, धीरे-धीरे इन्हें अदब-कायदा सिखा देंगे। इनका भी क्या दोष? जंगल में पले हैं, जंगली ही तो हैं!''

और गधा बोला, ''चलो, लौट चलें। यहाँ मेरा दिल नहीं लगेगा।''

''वापस कहाँ जाओगे?'' हाथी ने अपना बड़ा-सा सिर हिलाकर कहा, ''ट्रेनर का चाबुक फिर से खाना चाहते हो?''

''नहीं, नहीं, कभी नहीं!'' सभी जानवर एक साथ बोले। सभी की आँखों के सामने चाबुक हाथ में थामे ट्रेनर की तस्वीर उभर आयी थी।

उधर जंगल के जानवर अलग से गाँठ बनाये खड़े थे और सरकस के अपने संबंधियों की ओर देखे जा रहे थे। ऐसी ऊल-जलूल हरकतें करनी वे कहाँ से सीख आये हैं? कैसे बेसिर-पैर की उठक-बैठक कर रहे थे? इन्हें यही कुछ करना था तो यहाँ क्यों आये हैं? ये सचमुच पगला तो नहीं गये हैं?

अभी वे सोच-विचार कर ही रहे थे कि क्या देखते हैं कि भालू की बुढ़िया माँ भागती हुई अपने बेटे की ओर जा रही है। उसे यों भागता देखकर शेर से भी नहीं रहा गया। उसने एक लम्बी छलाँग लगायी और सरकस के अपने भाई की ओर भाग खड़ा हुआ। उधर हाथी भी अपने भाई से मिलने के लिए छटपटा रहा था। शेर को जाता देखकर वह भी पाँव बढ़ाता अपने भाई की ओर चल पड़ा।

फिर क्या था, सभी जानवर अपने बिछुड़े साथियों से गले लग गये। और वहाँ उत्सव का-सा समाँ छा गया।

● भीष्म साहनी